.....क्योंकि हम हैं हिंदुस्तान

मैं हिंदुस्तान हूं...तहजीब, परंपराएं, संस्कृति मेरी विरासत में बसती हैं। इन्हीं से बना है लोगों के रहन सहन का तरीका, लोगों के खान-पान के तरीके और जल संचय के घरेलू नुस्खे। जल संचय इसलिए क्योंकि इसके होने और न होने, दोनों ही सूरतों में जिंदगी के मायने बदल जाते हैं। लोगों का जीवन बदल जाता है और धरती का स्वरूप बदल जाता है। हम भी हिंदुस्तान हैं। इसलिए समझते हैं हिंदुस्तान की इस विरासत को। फर्ज है ये हम सबका, जो इसने हमें दिया उससे कहीं ज्यादा लौटाना।

यूं ही नहीं कहा जाता कि जल ही जीवन है। शायद यही वजह है कि हम यानी एचसीसीबी में हिंदुस्तान की धरती की प्यास बुझाने की लौ जगी है। इसके लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। यही हमारा मकसद है और इसी प्रेरणा भी हमें यहीं से मिली है। इसी कोशिश में हम जुड़े मध्य प्रदेश के बेतूल जिले में रहने वाले आदिवासियों से। पानी की कमी से सूखती शाहपुर और चिचोली की धरती की प्यास बुझाने को हमने एडवांस फॉर सोशल एक्शन (एएसए) से हाथ मिलाये और जल संचय के परंपरागत तौर तरीकों को खंगाला। उनसे प्रेरित हो, यहां स्टॉप डैम और तालाब बनाने का काम शुरु किया। इसमें स्थानीय लोग जुड़े तो उनकी मदद से कूएं खोदने की योजना भी बनी। चाहत है कि न केवल यहां की धरती की प्यास बुझे बल्कि यहां और इसके आसपास के 38 गांवों में रहने वाले 3700 परिवारों को भी पीने का पानी मुहैया हो।

पूरे नतीजे आने में अभी एक साल का वक्त और लगेगा। निश्चित लोगों को पानी मिलेगा। पर सबसे बड़ा संतोष इस बात का है कि हिंदुस्तान की इस विरासत ने जितना हमने दिया है उसकी एक बंदू ही सही, हम लौटाने में भागीदार बन रहे हैं क्योंकि बूंद बूंद से ही सागर बनता है।